सत्यमेव जयते

हिंदी त्रैमासिक ई-पत्रिका
लेखापरीक्षा ज्ञानोदय
पंद्रहवां संस्करण

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक
COMPTROLLER & AUDITOR GENERAL OF INDIA
सत्यमेव जयते

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा मुंबई,
सी 25, 8 वी मंजिल, ऑडिट भवन, बीकेसी, बांद्रा पूर्व, मुंबई – 400 051
फ़ैक्स-02226573814, ई-मेल pdcamumbai@cag.gov.in

लेखापरीक्षा ज्ञानोदय परिवार

मुख्य संरक्षक

डॉ संदीप रॉय

महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा

संरक्षक

मो. फैजान नय्यर, निदेशक/ऑयल

श्री सागर विजय काळे, उप निदेशक/मुख्यालय

संपादक-मंडल

श्रीमती स्वपना फुलपाड़िया	**वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी**
श्रीमती मीना देशप्रभु	**वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी**
श्रीमती विद्या मुरलीधरन	**वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी**
श्रीमती कल्पना असगेकर	**पर्यवेक्षक**
सुश्री पूजा साव	**कनिष्ठ अनुवादक**
सुश्री प्रियंका त्रिवेदी	**कनिष्ठ अनुवादक**

(रचनाओं की मौलिकता एवं विचारों से संबंधित पूर्ण उत्तरदायित्व रचनाकारों का है-संपादक मंडल)

अनुक्रमणिका	
संदेश	डॉ संदीप रॉय, महानिदेशक
संदेश	मो. फैजान नय्यर, निदेशक/ऑयल
संदेश	श्री सागर विजय काळे, उप निदेशक/मुख्यालय
संदेश	श्री अनुपम जाखड़, उपनिदेशक
संपादकीय	सुश्री पूजा साव
धन्यवाद पापा	श्रीमती स्वपना फुलपाड़िया
हिंदी मुहावरों पर आधारित लेख	श्री सरोज प्रजापति
आँचल	श्री जयराम सिंह
जय हो हिन्दुस्तान की	सुश्री पूजा साव
संयुक्त राष्ट्र संघ में भारत की स्थाई सदस्यता	सुश्री पूजा साव
सिटी ऑफ जॉय	श्री अरुण कुमार साव
स्कूल की कुछ यादें	श्री शरद धनगर
डायरी	इमरान खाटीक
समय	श्री रवि कुमार
मैं मां हूं	सुश्री फातेमा हवेलीवाला
सपने और दुनिया	श्री सचिन चौहान
आपके पत्र	

संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि कार्यालय द्वारा तिमाही हिंदी ई-पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के 15वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार को गति प्रदान करने तथा अपनी राजभाषा के लिए गौरवपूर्ण वातावरण तैयार करने में कार्यालयीन पत्रिकाओं का काफी योगदान होता है।

भारतीय संविधान द्वारा राजभाषा के रूप में मान्यता प्राप्त हिंदी के प्रति हम सभी का यह दायित्व है कि कार्यालयीन कार्यों में हिंदी का प्रयोग करने के साथ-साथ इसके प्रचार-प्रसार हेतु यथासंभव प्रयास करें। हिंदी का स्वरूप कठिन तथा जटिल तब हो जाता है जब हिंदी में मूल कार्य न करके अनुवाद का प्रयोग किया जाता है। अतः कार्यालय में अन्य भाषाओं के सहज एवं प्रचलित शब्दों का भी प्रयोग करना चाहिए जिससे यह प्रत्येक व्यक्ति के मन तक अपनी पहुंच बना सके। सभी कार्मिकों को राजभाषा हिंदी के विकास हेतु अपना यथासंभव योगदान देना चाहिए।

अंत में मैं उन सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को धन्यवाद देता हूं जिन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से पत्रिका के 15वें अंक को सफल बनाने में सहयोग किया है। प्राप्त रचनाओं के सुंदर प्रस्तुतीकरण हेतु संपादकीय मंडल को हार्दिक शुभकामनाएं।

मुझे आशा है कि हम सभी एक साथ मिलकर पत्रिका के उत्तरोत्तर विकास हेतु सदैव प्रयत्नशील रहेंगे।

(डॉ संदीप रॉय)

महानिदेशक

कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा, मुंबई

संदेश

यह अत्यंत प्रसन्नता का विषय है कि कार्यालय द्वारा त्रैमासिक हिंदी ई-पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के 15वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। कार्यालय द्वारा हिंदी पत्रिका का समयानुसार निरंतर प्रकाशन कार्यालय के राजभाषा के विकास में योगदान को प्रदर्शित करता है। पत्रिकाओं का प्रकाशन राजभाषा में कार्य करने हेतु प्रोत्साहित करने की दिशा में किए जा रहे कार्यों में से एक है जिसकी भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है।

केंद्र सरकार के सभी कार्मिकों का यह कर्तव्य है कि वे राजभाषा के प्रयोग को बढ़ाने तथा प्रयोग के लिए प्रोत्साहित करने हेतु यथासंभव प्रयास करें। आज हिंदी का प्रयोग वैश्विक स्तर पर भी बढ़ रहा है। हिंदी एक वैज्ञानिक भाषा है जिसको उसी प्रकार लिखा जाता है जिस प्रकार उसका उच्चारण किया जाता है। विभिन्न भाषा के शब्दों को स्वयं में समाहित करते हुए हिंदी एक संपर्क भाषा के रूप में एक उच्च स्तर पर पहुंच गई है। हमें अपने कार्यालय के काम-काज को यथासंभव राजभाषा में करते हुए इसके विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान देना चाहिए।

मैं कार्यालय के इस कार्य की सराहना करता हूं तथा हिंदी के प्रोत्साहन के लिए लगातार ऐसे प्रयास चलते रहें, ऐसी कामना करता हूं।

पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु संपादकीय मंडल को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

(मो फैजान नय्यर)
निदेशक/ऑयल
कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा, मुंबई

संदेश

यह प्रसन्नता का विषय है कि कार्यालय राजभाषा हिंदी के विकास में एक और कदम बढ़ाते हुए त्रैमासिक हिंदी ई-पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के 15वें अंक का प्रकाशन करने जा रहा है। राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में पत्रिकाओं का योगदान महत्वपूर्ण है। पत्रिकाएं अधिकारियों एवं कर्मचारियों के मन में राजभाषा के प्रति रुचि उत्पन्न करती हैं तथा राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन हेतु जारी निर्देशों से अवगत कराती है।

हिंदी एक सहज भाषा है। कार्यालय में हिंदी के प्रयोग को सरल बनाने हेतु अन्य भाषा के प्रचलित शब्दों का प्रयोग किया जाना चाहिए। अन्य भाषाओं के प्रचलित शब्दों के प्रयोग से कार्मिकों में रुचि जागृत होती है तथा हिंदी की शब्दावली में भी वृद्धि होती है। आवश्यकतानुसार इलेक्ट्रॉनिक साधनों का प्रयोग करके राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ाया जा सकता है। हमारे कार्यलाय द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने हेतु पत्रिकाओं के प्रकाशन के साथ-साथ विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया जाता है। हमारे संयुक्त प्रयासों से राजभाषा हिंदी के विकास हेतु सार्थक परिणाम प्राप्त होंगे।

पत्रिका के इस अंक के सफल प्रकाशन में सहयोग करने वाले समस्त रचनाकारों को धन्यवाद तथा संपादकीय मंडल को हार्दिक शुभकामनाएं।

मैं यह आशा करता हूं कि पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" का 15वां अंक आप सभी के लिए रुचिकर एवं ज्ञानप्रद होगा।

(सागर विजय काळे)
उप निदेशक/मुख्यालय,
कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा, मुंबई

संदेश

मुझे यह जानकर बहुत प्रसन्नता हुई कि कार्यालय द्वारा त्रैमासिक हिंदी ई-पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के 15वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। यह प्रकाशन कार्यालय के राजभाषा के विकास के प्रति उत्साह को प्रदर्शित करता है। राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में पत्रिकाओं का प्रकाशन अत्यंत उपयोगी सिद्ध होता है।

कार्यालय के इस कार्य की सराहना करते हुए हिंदी के प्रोत्साहन के लिए लगातार ऐसे प्रयास चलते रहें, ऐसी कामना करता हूं।

पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु संपादकीय मंडल को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

(अनुपम जाखड़)
उप निदेशक
उप कार्यालय निदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा, देहरादून

संपादकीय

हमारे कार्यालय की त्रैमासिक हिंदी ई-पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" का 15वां अंक आप सभी के समक्ष सादर प्रस्तुत है। यह पत्रिका हम सभी के सम्मिलित प्रयासों का ही परिणाम है। राजभाषा हिंदी के विकास हेतु पत्रिका का प्रकाशन एक सार्थक प्रयास है। पत्रिकाएं कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों में राजभाषा हिंदी के प्रति रुचि जागृत करने के साथ-साथ छुपी हुई सृजनात्मक प्रतिभाओं को उजागार करने के लिए सार्थक सिद्ध होती है।

हिंदी भाषा का प्रयोग राष्ट्रीय स्तर के साथ-साथ अब अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी बढ़ रहा है। हिंदी भाषा में अन्य भाषाओं के शब्दों को ग्रहण करने की अद्भूत क्षमता है जो इस भाषा की सबसे बड़ी शक्ति है। हिंदी का प्रयोग तीव्र गति से बढ़ रहा है तथा हमारे सहयोग के फलस्वरूप राजभाषा को उचित स्थान अवश्य प्राप्त होगा।

सभी उच्च अधिकारियों के प्रति हार्दिक आभार जिनके प्रोत्साहन एवं सहयोग के फलस्वरूप पत्रिका का सफल प्रकाशन किया जा सका है। सभी रचनाकारों को सादर धन्यवाद जिन्होंने अपने रचना कौशल को प्रदर्शित करते हुए अपनी रचनाओं को पत्रिका में शामिल करने हेतु प्रस्तुत किया है। आप सभी से अनुरोध है कि पत्रिका के आगामी अंकों के लिए भी आप अपना सहयोग देते रहें।

आशा है कि पूर्व अंकों की तरह पत्रिका का यह अंक भी पाठकों के लिए रुचिकर एवं ज्ञानवर्धक होगा। पाठकों से हमारा यह विनम्र अनुरोध है कि पत्रिका को पढ़ने के पश्चात अपने अमूल्य विचारों से हमारा उत्साहवर्धन करें तथा अपने विचारों से हमें अवगत कराएं।

पूजा साव

कनिष्ठ अनुवादक

श्रीमती स्वपना फुलपाड़िया
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

धन्यवाद पापा

मेरे पिता छोटे, पतले और दुनिया के सबसे प्यारे इंसान हैं। वह जिम्मेदार है, दयालु है, खुश है और सबसे खास बात, वह कभी हार नहीं मानते। वे समस्या होने पर दूसरों की मदद करना पसंद करते है क्योंकि वे नहीं चाहते है कि दूसरों को वही सब झेलना पड़े जो उन्होंने झेला, जब उन्हें मदद की ज़रूरत थी और कोई भी उनके लिए नहीं था।

मेरे पिता का जन्म ढाका (बांग्लादेश) में एक बहुत ही गरीब परिवार में हुआ था। जब उनका जन्म हुआ तो उनकी माँ का निधन हो गया। इसलिए लोगों ने उन्हें सबसे बदकिस्मत इंसान मान लिया। उन्हें बचपन में सुविधाओं का आनंद लेने का कोई मौका नहीं मिला। उनका बचपन सदैव कष्टकारी रहा। जब उन्होंने स्नातक की पढ़ाई पूरी की तो वे भारत आ गये और अपने भाई के साथ रहने लगे। उनके मन में चार्टर्ड अकाउंटेंट बनने का सपना था। उनके भाई की एक फर्म थी और उन्होंने वहां काम करना शुरू कर दिया लेकिन कभी आर्टिकलशिप करने का मौका नहीं दिया। यह उनके लिए एक बुरी जागृति थी जब उन्हें पैसों की दिक्कत होने लगी, क्योंकि वे अपने भाई से बहुत प्यार करते थे।

जल्द ही उनका जीवन बिलों का भुगतान करने और मेज पर खाना रखने की चिंताओं से भर गया, लेकिन उन्होंने कभी उम्मीद नहीं खोई और अपने परिवार के जीवन स्तर को बेहतर बनाने के लिए कड़ी मेहनत करते रहें। उन्होंने आर्टिकलशिप शुरू की और इंटरमीडिएट पास किया। बाद में ईश्वर की कृपा से उन्हें सरकार मिल गयी। तत्पश्चात उन्होंने शादी कर ली। फिर एक दिन मैं उनकी जिंदगी में आई। मैं उनका पोषित सपना थी और उन्होंने मुझे यह नाम दिया। पूरी जिंदगी उनके परिवार के सभी लोग उनसे कहते रहे, "वह लड़की है और वह काली है, बेहतर होगा कि उस पर ज्यादा खर्च न किया जाए।" लेकिन मेरे

पिता ने अपना सारा ज्ञान सपना को दे दिया। मैं स्नातक उत्तीर्ण कर परास्नातक बन गई लेकिन कभी चार्टर्ड अकाउंटेंट नहीं बन पाई। मैंने सर्वश्रेष्ठ लेखापरीक्षक बनने की कोशिश की और मेरे पिता बहुत खुश थे कि वह पर्यवेक्षक के रूप में सेवानिवृत्त हुए और मैं अनुभाग अधिकारी के रूप में शामिल हुई।

मैं उनकी ताकत थी। मैंने शादी की और चली गई। उन्हें हमेशा मेरी याद आती थी। मैं अपने नए जीवन की ओर बढ़ गई। इस नए जीवन का आदी होना एक बड़ा संघर्ष था, लेकिन अंततः मैंने सब कुछ समायोजित कर लिया। मेरे पिता की अपने परिवार के जीवन को बेहतर बनाने की क्षमता ने मुझे जीवन से सर्वोत्तम प्राप्त करने के लिए हमेशा कड़ी मेहनत करने के लिए प्रेरित किया है। मेरा मानना है कि अगर मेरे पिता बहुत कम मेहनत से इतना आरामदायक जीवन जीने में सक्षम थे, तो मुझे भी ऐसा करने में सक्षम होना चाहिए, क्योंकि मेरी उम्र में उनके पास जो कुछ भी था, उसकी तुलना में मेरे पास सभी हैं।

जल्द ही मेरे पिता बूढ़े हो गए और हमेशा मुझसे मिलने का इंतज़ार करने लगे। मैंने अपने बच्चे और परिवार के साथ उनके लिए समय देने के बारे में कभी नहीं सोचा। धीरे-धीरे उन्होंने अपनी आँखें खो दीं लेकिन हमेशा मुझे देखने के लिए खोजते रहे। वर्ष 2015 में मैंने अपनी बेटी की परीक्षा के लिए छः महीने की छुट्टी ली लेकिन कभी उनसे मिलने नहीं गई। उन्होंने अपनी यादें खो दीं।

मुझे मेरी मां का फोन आया कि वह मुझसे एक बार मिलने को इच्छुक हैं। मैंने सोचा कि एक कार्यक्रम होना चाहिए और उनकी कोई यादें नहीं हैं। मैं अपनी बेटी की परीक्षा के बाद उनसे मिल सकती हूं।'

लेकिन भगवान को कुछ और ही मंजूर था और शायद मेरे पिता को इसकी जानकारी थी। वे फोन करते रहे, मैं मेरी प्राथमिकताओं में थी। उन्होंने मुझे धन्यवाद देने का समय ही नहीं दिया।

भले ही मेरे पिताजी वहां नहीं हैं, मैं दिखावा करती हूं कि वह अभी भी मेरे साथ हैं। वे हर दिन मुझे फोन करते थे और जब मैं उनसे बात करती थी, तो मैं अपनी आंखें बंद कर लेती थी और याद करती थी कि जब वे काम से घर आते थे, तो वे मुझे कैसे गले लगाते थे। मैं अभी भी अपने चारों ओर लिपटी हुई उनकी उपस्थिति को महसूस कर सकती थी, लेकिन मुझे फिर से उनके साथ रहने और एक साथ खेलने की इच्छा हुई जैसे हम हर दिन स्कूल से घर आने पर करते थे।

दूसरे शब्दों में कहूं तो मैं अपने पिता की तरह हूं। चाहे जीवन में कोई भी समस्या क्यों न आए, मैं किसी भी परिस्थिति में अपने आपको निराश नहीं होने देती। मेरे पिता की कहानी मुझे एहसास दिलाती है कि अपने लक्ष्य तक न पहुंच पाने के लिए मेरे पास कोई बहाना नहीं है और उनकी वजह से ही मैं बहुत दृढ़ निश्चयी व्यक्ति हूं। मैं कभी हार नहीं मानती। भले ही मुझे लगे कि मेरी प्रतिकूलताएं कभी-कभी भारी पड़ सकती हैं। अगर मैं लगातार काम करती रहूं और इसके लिए लड़ूं तो एक सफल, स्वतंत्र महिला बनने का मेरा सपना सच हो जाएगा।

वे अपनी दृढ़ता और ताकत के कारण हमारे परिवार को जमीन से ऊपर उठाने में सक्षम थे। वह मेरे हीरो है, मेरे आदर्श है, वह आदमी जो कभी मेरा दिल नहीं तोड़ेगा और मैं उनसे और उस परिवार से प्यार करती हूं जो भगवान ने मुझे दिया है। मैं इसके लिए हर दिन उन्हें धन्यवाद देती हूं।

श्री जयराम सिंह
कनिष्ठ अनुवादक

आँचल

- "सुनो कल हम बाहर नहीं गए। आज मीटिंग जल्दी ख़त्म करके आ रहा, डिनर के लिए चलेंगे।"

वेद की बातें सुन नैना की ऑखें ख़ुशी से चमक गईं, मगर अगले ही पल सास का ख्याल आया और चमक की जगह मायूसी ने ले लिया।

- "मम्मी जी का क्या करेंगे।"

- "अरे। माँ के लिए खाना बना दो। मैं साढ़े सात तक आ जाउँगा। अच्छा सुनो, वो जो गुलाबी साड़ी लखनऊ से मैं लाया था न, वही पहन लेना, मेरी जानाँ । और हाँ, बाल आज खुले रखना।"

ब्लश करती नैना किचन में चली गई, मगर फिर याद आया, तो बाहर आई और सासु माँ को बता दिया कि वे दोनों खाने के लिए बाहर जा रहें हैं। सासु माँ बग़ैर कुछ बोले, पड़ोसी के यहाँ चली गई और नैना न जाने डेढ़ घण्टे तक क्या सब करती रही।

गाड़ी का हॉर्न सुन कर भागते हुए बाहर आई । वेद हाथों में उसके पसन्द के 'दिल' वाले लाल गुब्बारे लिए मुस्कुरा रहा था। नैना बच्चों की तरह भाग कर लिपट गई । वेद को याद आ रहा था कि कैसे कल पूरी रात पीठ फेर कर सोई रही और सुबह भी मुँह फूला था। नैना में दुनियादारी की कम समझ थी और बचपना ज्यादा। उसी पर तो वो मर मिटा था।

- "अच्छा चलो तुम तो तैयार ही हो, मैं जल्दी से फ्रेश हो लेता हूँ। माँ कहाँ है, खाना खा लिया उसने ?"

- "हूँ। चलिए।"

अंदर डाइनिंग हॉल में पहुँच कर वेद दंग रह गया। पूरा टेबल खाना और गुलदस्तों से सज़ा था। किनारे पर पापा और माँ के विवाह वाली 'ब्लैक एंड व्हाइट' तस्वीर रखी हुई थी और बीच में कुछ कैंडल्स रखें हुए थे।

वेद की आँखें तर हो गईं । नम मुस्कुराहट के साथ वेद ने नैना को देखा । नैना खड़ी-खड़ी मुस्कुरा रही थी । वेद लपका और चूम लिए उसके नर्म हाथों को और अपनी हथेली में उसके चेहरे को भर कर सिर्फ, "जानाँ" ही बोला था कि दरवाजे पर आहट हुई। वो अलग हो कर खड़े हो गए। मम्मी जी आ गई थी।

- "अरे, तुमलोग अभी यहीं हो? गए नहीं ? देर हो जाएगी, जाओ।"

- "मम्मी जी, आज आपके साथ मनाएंगे हमलोग इस दिन को। आप की वजह से मुझे वेद जैसे पति मिले। आपने इन्हें प्रेम सिखाया है । आपने इन्हें सिखाया है कि कैसे इज़्ज़त की जाती है अपने साथी की। आज का दिन आपका है मम्मी जी। आइए, बैठिए यहाँ।" और स्वयं अंदर जा कर गाना बजा दिया । वापस आकर सासु माँ के बगल में बैठ गई । मम्मी जी की आँखों में ख़ुशी के आँसू थे। अंदर गाने की लाइन बज रही थी - "प्यारा पिया है, तुमने दिया है, ममता के आँचल में तुमने लिया है" ।

वेद माँ से नज़रें बचा कर नैना को देख लेता और हौले से बीच-बीच में उसके हाथों को छू भर लेता था । मारे शर्म के नैना गुलाबी साड़ी में और भी अधिक गुलाब-सी हुई जा रही थी।

सुश्री पूजा साव
कनिष्ठ अनुवादक

जय हो हिन्दुस्तान की

इस मिट्टी को नमन करो यह मिट्टी स्वाभिमान की ।
भारतवर्ष महान की जय, जय हो हिन्दुस्तान की ।।

ऋषियों, मुनियों, तपस्वियों से सिंचित है यह धरती
अपने उपवन के फूलों में रंग सुगन्ध है भरती

इस मिट्टी में भरी कथाएँ त्याग, धर्म, बलिदान की ।

धूल-धूसरित राम, कृष्ण जैसे ईश्वर हैं खेले
इस मिट्टी में प्रेम भाव के लगते हरदम मेले
इस मिट्टी में वेदों की उत्पत्ति हुई पुराण की ।

हर नर के आदर्श राम और नारी की है सीता
यहीं पर अमृत देकर ईश्वर स्वयं हलाहल पीता
यहीं राधिका ने समझाई प्रेम के महिमागान की ।

यहाँ की नदियाँ झील सरोवर सब पूजित हैं होते
कंकड़- कंकड़ शंकर दिनकर स्वर्णिम किरणें बोते
इक इक डुबकी मोक्ष दिलाती है गंगास्नान की ।

खड़ा हिमालय पहरा देता सागर पाँव है धोता
भारत में जो आता भारत का ही बनकर होता
पुण्य पराक्रम की पूँजी है भारत भूमि महान की ।

राज्य बड़ा है शासक से इस मिट्टी ने बतलाया
रामराज्य ने समृद्धि अर्जित करना सिखलाया
यहीं कथाएँ मिलती हैं परहितार्थ अस्थिदान की ।

इस मिट्टी को नमन करो यह मिट्टी स्वाभिमान की ।
भारतवर्ष महान की जय, जय हो हिन्दुस्तान की ।।

सुश्री पूजा साव
कनिष्ठ अनुवादक

संयुक्त राष्ट्र संघ में भारत की स्थाई सदस्यता

अहंकारी, दम्भी, आततायी, घमंडी और षडयंत्रकारी शासकों की क्रूरता और निर्दयतापूर्ण दानवी द्वितीय विश्वयुद्ध के कारण तथाकथित विजयी परंतु भयकंपित राष्ट्राध्यक्षों ने अपनी भौतिक सुरक्षा और सत्ता को अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए संयुक्त राष्ट्र की स्थापना 24 अक्टूबर 1945 को किया । इसके मूल संस्थापक और स्थाई सदस्य के रूप में (अमेरिका, चीन, यूके, फ्रांस और रूस) सिर्फ पांच राष्ट्र हैं । उस समय संयुक्त राष्ट्रसंघ के अधिकारपत्र पर 50 देशों ने हस्ताक्षर किया था । वास्तव में द्वितीय विश्वयुद्ध के विजेता देशों ने मिलकर संयुक्त राष्ट्र को अन्तर्राष्ट्रीय संघर्ष तथा मामलों में हस्तक्षेप करने तथा अपना वर्चस्व कायम रखने के उद्देश्य से स्थापित किया था । वे चाहते थे कि भविष्य में हमें टक्कर देने की हैसियत रखनेवाला अन्य कोई भी देश न हो पाए । वर्तमान में संयुक्त राष्ट्र में 193 राष्ट्र हैं, विश्व के लगभग सारे अन्तरराष्ट्रीय मान्यता प्राप्त राष्ट्र शामिल हैं ।

ध्यान रहे, अंतर्राष्ट्रीय संगठन उन संस्थाओं को कहते हैं जिसके सदस्य, कार्यक्षेत्र तथा उपस्थिति वैश्विक स्तर पर हो। और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विवादों को सुलझाने तथा शांति और सुरक्षा स्थापित करने में सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हो । राष्ट्रसंघ के सुरक्षा परिषद में १५ सदस्यों में से पाँच स्थायी सदस्य हैं (चीन, फ्रांस, रूस, ग्रेट ब्रिटेन और संयुक्त राज्य अमेरिका) उपरोक्त पाँचों देशो के पास वीटो पावर है । बाकी के दस सदस्य क्षेत्रीय आधार के अनुसार दो साल की अवधि के लिए सामान्य सभा द्वारा चुने जाते हैं । सुरक्षा परिषद का अध्यक्ष हर महीने

वर्णमालानुसार बदलता है । संयुक्त राष्ट्र संघ के छह अंग हैं :- 1. सुरक्षा परिषद् 2. अन्तरराष्ट्रीय न्यायालय 3. महासभा 4. सचिवालय 5. आर्थिक और सामाजिक परिषद् 6. न्याय परिषद् ।

सुरक्षा परिषद के स्थायी सदस्यों की संख्या को बढ़ाने के बारें में बहुत विवाद है । जापान और जर्मनी संयुक्त राष्ट्र की अत्यधिक आर्थिक सहायता करते हैं और ब्राजील तथा भारत जनसंख्या में बड़े होने के कारण संयुक्त राष्ट्र के विश्व शान्ति के लक्ष्य के लिए सैन्य-दल के सबसे बड़े योगदान करनेवालों में से हैं । फिर भी इन राष्ट्रों को सुरक्षा परिषद में वीटो का अधिकार नहीं दिया जा रहा है । यह सीधा अन्याय और षडयंत्र है । आखिर संयुक्त राष्ट्रसंघ के गठन का क्या उद्देश्य माना जाए ? क्या उपरोक्त पाँचों राष्ट्र अपनी सत्ता को वैश्विक राजनीति में अक्षुण्ण बनाए रखना चाहते हैं ? वैसे इन पाँचों में भी रूस और चीन को नजरंदाज ही किया जाता रहा है । इसका मतलब साफ है कि अँग्रेज आज भी विश्व को अपना गुलाम बनाने में सफल हैं ।

ध्यातव्य हो कि अमेरिका की जनसंख्याः 30.5 करोड़, फ्रांस की 6.59, रूस की 14.67 यूके की लगभग 6.17 करोड़ चीन की आबादी लगभग एक अरब चालीस करोड़ (1.40 अरब) है। इसके इतर देशों की आबादी को जोड़ा जाए तो लोकतंत्र का भीषण उपहास नजर आएगा । अगर इसे और अनदेखा किया गया तो संयुक्त राष्ट्र की भी विश्वसनीयता धीरे-धीरे कम होती चली जाएगी । भारत के विदेशमंत्री श्री एस जयशंकर ने कहा है कि भारत दुनिया की सबसे अधिक आबादी वाला देश और पाँचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है । ऐसे में अगर भारत को ही यूएनएससी की स्थाई सदस्यता नहीं दी जाएगी तो संयुक्त राष्ट्र की विश्वसनीयता पर सवाल उठेंगे ही ।

विश्व के राजनीतिक क्षितिज पर 20वीं शताब्दी में तीन ऐसी घटनाएं हैं जिसके कारण अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिक प्रणाली में ही भूचाल आ गया । पहली घटना प्रथम विश्व युद्ध की समाप्ति के बाद (1919), दूसरा अवसर द्वितीय विश्व युद्ध की समाप्ति के बाद (1945) तथा तीसरा अवसर सोवियत संघ के विघटन के बाद 1990 । इनके परिणामस्वरूप विश्व शक्ति सन्तुलन में बुनियादी परिवर्तन दृष्टिगोचर होने लगा । विश्वव्यापी राजनीतिक परिवर्तनों की तीव्रता एवं स्वरूप, समय एवं परिस्थितियों के साथ परिवर्तित होते रहते है । इन परिवर्तनों का स्वरूप सीमित तथा तीव्रता न्यून होने के बावजूद कभी कभी यह इतनी क्रांतिकारी होती है कि तत्कालीन विश्व व्यवस्था एवं आधारभूत मान्यताओं को ही बदल देती है ।

द्वितीय विश्वयुद्धोपरांत अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था में अनेक वैचारिक एवं विरोधी प्रवृत्तियाँ एक साथ क्रियाशील हुई और विश्व दो परस्पर विरोधी खेमों में विभाजित हो गया । शस्त्रों की होड़, विश्व के विभिन्न भागों पर वर्चस्व स्थापित करने की प्रतिस्पर्धा और संयुक्त राष्ट्रसंघ की उपेक्षा इस व्यवस्था के स्थाई अंग बन गए । शीत युद्ध की राजनीति ने विश्व राजनीति को इस तरह प्रभावित किया कि विश्व राजनीति का स्वरूप लगभग एक पक्षीय होकर रह गया तथा सम्पूर्ण अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति वाशिंगटन और मास्को के इर्द गिर्द केन्द्रित हो गई ।

आज के समय में भारत एक तेजी से विकसित होती हुई अर्थव्यवस्था होने के साथ-साथ विश्व की सबसे अधिक आबादीवाला सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है । भारत को सुरक्षा परिषद की स्थाई सदस्यता दिए बिना अब संयुक्त राष्ट्र संघ का कोई औचित्य नहीं है ।

श्री अरुण कुमार साव
कनिष्ठ अनुवादक

'सिटी ऑफ जॉय'

पश्चिम बंगाल की राजधानी 'कोलकाता' जो 1 जनवरी 2001 से पहले कलकत्ता हुआ करती थी। इसे 'सिटी आफ जॉय' के नाम से भी जाना जाता है। कोलकाता भारत के महानगरों में से एक महानगर है। कोलकाता एक ऐसा शहर है जहां हर एक कोने के साथ एक समृद्ध ऐतिहासिक किस्सा जुड़ा हुआ है। यहां हर समुदाय के लोग एक साथ मिलजुल कर रहते हैं। यहां की मुख्य त्योहार दुर्गा पूजा है और इसके साथ-साथ मां काली की भी पूजा बड़े ही धूमधाम से होती है। कोलकाता के बीचों बीच कालीघाट में स्थित मां काली की एक प्राचीन मंदिर है, जिसमें श्रद्धालुओं की भीड़ हमेशा ही रहती है। हुगली नदी के तट पर तथा विवेकानंद सेतु के कोलकाता छोर पर मां दक्षिणेश्वरी काली की मंदिर है। जिसे रानी रासमणि ने 1847 में बनवाया था। यहां की खूबसूरती देखते ही बनती है। इस मंदिर की ख़ास बात यह है कि यह मंदिर स्वामि विवेकानंद के गुरु रामकृष्ण परमहंस की कर्मभूमि रही है। आज भी इस मंदिर के एक किनारे में उनकी कोठरी स्थित है। रामकृष्ण परमहंस माँ काली के बहुत बड़े भक्त थे।

हमारा देश जब ब्रिटिशों के अधीन था तब कोलकाता भारत की राजधानी हुआ करती थी। आप अगर कोलकाता भ्रमण के लिए जाएँगे तो यहां के इमारतों की संरचना देखकर आपको यह स्पष्ट हो जाएगा कि यहां ईस्ट इंडिया कंपनी का वर्चस्व रहा होगा। क्योंकि आज भी अंग्रेजों के द्वारा बनाए गए बड़े-बड़े इमारतें और महलें स्थापित है जिसकी खूबसूरती अद्भुत है। कुछ इमारतें तो खंडहर में बदल चुकी है।

भारत की पहली ट्राम गाड़ी यहीं पर चली थी। केवल भारत में ही नहीं बल्कि पूरे एशिया में प्रथम विधुत चालित ट्राम कोलकाता में ही चली। ट्राम की शुरुआत अंग्रेजों ने की थी और उनकी इस विरासत को महसूस करना बिल्कुल बनता है। ये एशिया का सबसे पुराना इलेक्ट्रिक ट्राम है और आपको इस शाही सवारी का अनुभव ज़रूर लेना चाहिए। ये ट्राम शहर की कई खूबसूरत जगहों से होकर गुजरती है इसलिए अगर आपके पास समय की कमी है तो ट्राम पर कोलकाता घूमने से अच्छा और कुछ नहीं है। ट्राम कोलकाता के इतिहास से बहुत ही गहराई से जुड़ी हुई हैं और

लोकप्रिय संस्कृति में इसे बार-बार चित्रित किया गया है। वैसे तो अब कोलकाता में ट्राम सेवाएं बहुत कम हो गयी है। लेकिन आज भी यहाँ ट्राम लाइनें है और कुछ स्थानों पर आज भी ट्राम चलती है।

भारत की सर्वप्रथम मेट्रो ट्रेन भी कोलकाता में ही चली थी। हाल ही में हुगली नदी के अंदर से सुरंग के माध्यम से मेट्रो ट्रेन की शुरुआत हुई है जो हावड़ा को कोलकाता से जोड़ती है। इससे रोज यातायात करने वाले यात्रियों को काफी लाभ होगा।

यहां के लोग खाने-पीने के बहुत ही शौकीन होते हैं। 'माछ-भात' (चावल और मछली) यहाँ की सबसे प्रिय भोजन है। मछली के बिना यहां सब कुछ अधूरा है। हिलसा मछली सर्वप्रिय है। कोलकाता की मिठाइयां विश्व प्रसिद्ध है। यहां आपको रसगुल्ला, मिस्टी दोई (मीठा दही), संदेश, जोलभोरा (जलभरा एक प्रकार की मिठाई) ऐसे विभिन्न प्रकार के मिठाइयां मिलेगी, जो अत्यंत ही स्वादिष्ट होती है। इसके अलावा कोलकाता में काफी सारे बड़े-बड़े बाज़ार हैं, जो कि पूरे भारतवर्ष में मशहूर है सर्व प्रसिद्ध भी है। यहां धर्मतल्ला (स्प्लानेड) में बहुत बड़ा बाज़ार है। यहां आपको आपकी जरूरत की सारी वस्तुएं सुलभ मूल्य में उपलब्ध हो जाएगी। उसके उपरांत हावड़ा ब्रिज को पार करते ही आपको मिलेगी कोलकाता की मशहूर 'बड़ा बाजार'। वैसे तो जहां आपको हर वो चीज़ मिल जाएगी जिसकी आपको आवश्यकता हो परंतु यह बाज़ार मुख्यतः कपड़े के लिए सुप्रसिद्ध है। विशेष रूप से यह बाज़ार महिलाओं के साड़ी के लिए ज्यादा प्रसिद्ध है।

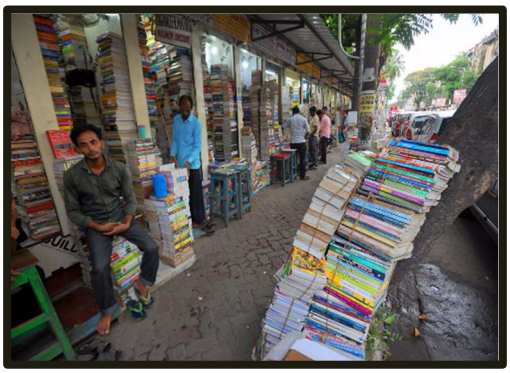

यदि आप पुस्तक पढ़ने के शौकीन है तो महात्मा गांधी रोड से होते हुए कॉलेज स्ट्रीट अवश्य जाएँ। यहां पर आपको सुलभ मूल्य में सारी पुस्तके मिल जाएगी। कॉलेज स्ट्रीट बहुत ही बड़े क्षेत्र में फैली हुई है। यहां पर कोलकाता विश्वविद्यालय भी है। इसके बाद यहीं पर आपको प्रेसीडेंसी कॉलेज भी देखने को मिलेगी। जो की अंग्रेजों के समय की है और भी बहुत सारे कॉलेज यही स्थित है। यह स्थान विद्यार्थियों और किताबों का एक सैलाब है। किताबी कीड़ों और इतिहास के शौकीनों को कॉलेज स्ट्रीट पर टहलना नहीं भूलना चाहिए, जो कोलकाता की शैक्षणिक विरासत के माध्यम से एक आकर्षक अनुभव प्रदान करता है। हैं। दुनिया में ऐसी कोई किताब नहीं है जो कॉलेज स्ट्रीट में नहीं मिलेगी। पुरानी किताबों से लेकर ऐसी किताबें जो शायद अब कहीं नहीं मिलती वो भी यहाँ मिल जाएँगी। इसके अलावा कॉलेज और पढ़ाई से जुड़ी सभी किताबें भी यहाँ आसानी से मिल जाती है।

आपको हावड़ा स्टेशन से भारतवर्ष के हर एक कोने के लिए ट्रेन मिल जाएगी। रवींद्र सेतु विश्व प्रसिद्ध ब्रिज है। जिसे हावड़ा ब्रिज भी कहा जाता है। अधिकांश लोग 'हावड़ा ब्रिज' के नाम से ही परिचित है। प्रसिद्ध हावड़ा ब्रिज कोलकाता के इंजीनियरिंग कौशल और ऐतिहासिक महत्व का एक कालातीत प्रमाण है। हुगली नदी पर फैला यह पुल हावड़ा और कोलकाता को जोड़ता है, जो दैनिक यात्रियों के लिए जीवन रेखा के रूप में कार्य करता है। यह ब्रिज हर समय आपको व्यस्त मिलेगी खासकर शाम और सुबह के समय। यह पुल अपनी शानदार वास्तुकला के लिए प्रसिद्ध है। कोलकाता की परिवहन प्रणाली में अभिन्न भूमिका निभाता है। इसकी सुंदरता निवासियों और पर्यटक दोनों को आकर्षित करता है। इसके पैदल मार्गों पर टहलने से आप शहर की जीवंत संस्कृति और व्यस्त जीवन शैली देख पायेंगें। हावड़ा ब्रिज की एक खास बात यह भी है कि इसके निर्माण में स्टील की प्लेटों को जोड़ने के लिए नट-बोल्ट नहीं, बल्कि धातु की बनी कीलों का इस्तेमाल किया गया था।

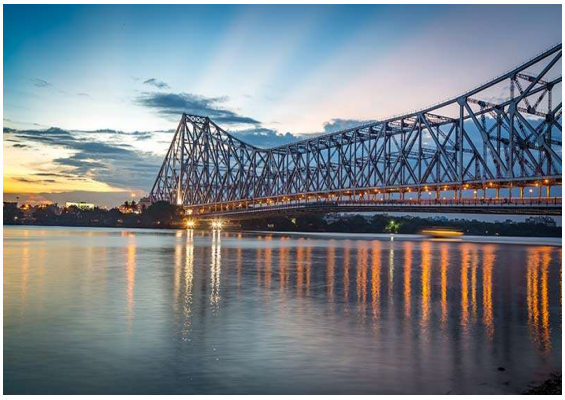

रामकृष्ण मिशन यही बेलूर में स्थित है, जिसकी स्थापना स्वामी विवेकानंद जी ने की थी। उद्देश्य ऐसे साधुओं और सन्यासियों को संगठित करना था, जो रामकृष्ण परमहंस की शिक्षाओं में गहरी आस्था रखें। इसके पश्चात आप हावड़ा स्टेशन से लोकल ट्रेन पड़कर तारकेश्वर जा सकते हैं जहां शिवजी की प्राचीन मंदिर स्थित है। यहां साल के 12 महीने श्रद्धालुओं की भीड़ रहती है।

कोलकाता के मध्य स्थित विक्टोरिया मेमोरियल जिसे महारानी विक्टोरिया के याद में बनाया था। जो आज एक प्रसिद्ध पर्यटक स्थल है। कोलकाता की यात्रा पर आए पयर्टक अंग्रेजों की इस शाही विरासत विक्टोरियल मेमोरियल को देखे बिना नहीं जाते। विक्टोरिया मेमोरियल न केवल कोलकाता बल्कि देशभर में घूमने और ब्रिटिश काल के बारे में जानने के लिए सबसे अच्छा पर्यटन स्थल माना जाता है। जहां आप ₹ 30 की टिकट लेने के बाद पूरा महल घूम सकते हैं और ब्रिटिश काल के काफी सारे पुरानी वस्तुएं संग्रहालय में देख सकते हैं। संग्रहालय में रखी औपनिवेशिक युग की प्राचीन वस्तुएँ समग्र अनुभव को

बढ़ाती हैं। यहां आप घोड़े की सवारी भी कर सकते हैं। इसके कुछ ही दूरी पर क्रिकेट स्टेडियम ईडन गार्डन है।

यहां की मुख्य भाषा बांग्ला है लेकिन यहां के लोग हिंदी को अच्छी तरह से समझते हैं और बोलते हैं। आप यदि बांग्ला भाषा नहीं जानते हो तो आप यदि हिंदी में बात करें तो आप से लोग हिंदी में बात करेंगे। पश्चिम बंगाल में हिंदी की जड़ें बहुत गहरी हैं और लगभग सभी बंगाली भाषी किसी न किसी रूप में हिंदी बोलते हैं। हुगली नदी के दोनों किनारे जूट मिल इलाकों में बड़ी संख्या हिंदी भाषियों की आबादी है।

यहां आज भी अति प्राचीन हाथ रिक्शा चलती है। जिसे चालक पैदल ही दोनों हाथों से रिक्शे को उठाकर सवारी ले जाते है। यह कार्य अत्यंत ही परिश्रम का होता है। लेकिन यहां आज भी यह प्रथा प्रचलित है और लोग इस हाथ रिक्शा को सवारी के रूप में उपयोग करते। यहाँ के रिक्शा चालक अत्यंत ही परिश्रमी होते है। दिन-रात परिश्रम करने के बाद भी दिन के 500 भी नहीं कमा पाते है। लेकिन आज भी ये रिक्शा चालक कोलकाता के इस ऐतिहासिक धरोहर को बचा कर रखे हुये है।

कोलकाता को सिटी ऑफ जोय क्यों बोला जाता है? इसके लिए आपको एक बार कोलकाता भ्रमण अवश्य करनी चाहिए। कोलकाता शहर भारतवर्ष की एक अनमोल और ऐतिहासिक धरोहर है। इस धरोहर की अपनी एक ऐतिहासिक पृष्ठभूमि है। कोलकाता में बहुत सारे आकर्षक और ऐतिहासिक पर्यटक स्थल है, जिसे इस छोटे से लेख के माध्यम से वर्णन करना असंभव है। कोलकाता के चित्ताकर्षक और मनोरम दृश्य का लुप्त उठाने के लिए आप एक बार कोलकाता भ्रमण अवश्य करें।

श्री शरद धनगर
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

स्कूल की कुछ यादें

स्कूल मतलब बचपन, पहला दिन, उलझन, नए दोस्त, छोटी-छोटी बातों में मिलने वाली खुशी, होमवर्क, मां द्वारा ली गई पढ़ाई, टीचर का डांटना, खेलकूद, पहली बार किया गया डांस, पसंदीदा टीचर, मध्यावधि अवकाश, साथ बैठकर खाए हुए डिब्बे, रिजल्ट के दिन का डर, 10वी का बोर्ड एग्जाम, सैंडऑफ, टीचर्स और स्टूडेंट्स की आंखों में आये हुए आंसू, 10 साल की यादें.....

स्कूल की यादें हर किसी को याद रहती हैं, स्कूल की यादें लोगों को यही सोचने को मजबूर कर देती हैं कि, काश स्कूल के दिन वापस आ जाएं, क्योंकि स्कूल के दिनों में शरारती दोस्तों के साथ समय बिताना वास्तव में बहुत ही अच्छा लगता था। स्कूल के अध्यापक, स्कूल की क्लास एवं प्यारा सा सुंदर स्कूल सच में बहुत ही याद आता है।

घर से निकलते वक़्त जब भी किसी स्कूल बस या वैन पर नज़र पड़ती है, स्कूल की पुरानी यादें ताज़ा हो जाती हैं I बच्चों के खिलखिलाते चेहरे देख सोचने लगताI हूं ये बच्चे कितने लकी हैं जो बिना किसी टेंशन के बस सिर्फ़ मस्ती ही मस्ती में लगे हुए हैं. काश! मुझे भी इनकी तरह मस्ती करने का मौका मिल पाता I

स्कूल का नाम लेते ही सारे फ्लैशबैक आंखों के सामने आ जाते है, वो सारी पुरानी यादें, जो हमने 10 सालों में साथ निकले थे। चाहे 3rd स्टैंडर्ड में की गई शरारत हो या चोरी छुपे खाया गया डिब्बा, सब कुछ मजेदार था I कभी-कभी हम स्कूल एवं घर में इतनी मस्ती करते थे की हमें टीचर और मां से बहुत डॉट पड़ती थी I

स्कूल ही एक ऐसी जगह है जहाँ हम 10 साल तक एक ही बैच के साथ रहते हैं और एक अनोखी दोस्ती बनाते हैं, जिसे हम कभी नहीं भूल सकते हैं, चाहे हमें कितने भी नए दोस्त मिल जाएँ। कभी-कभी हमारा दोस्तों के साथ झगड़ा भी हो जाया करता था, फिर कुछ दिनों तक एक दूसरे को सिर्फ घूरते और मुँह बनाते, फिर धीरे धीरे हमारी दोस्ती हो जाती क्योंकि हम एक दूसरे से जादा दिन तक बिना बात किये रह भी नहीं पाते थे। ऐसी होती थी हमारी दोस्ती। स्कूल में सारे त्यौहार मनाए जाते थे और हम रंग बिरंगे कपड़े पहन के आते थे, और खूब मस्ती करते थे, क्योंकि हमें कोई भी टेंशन नहीं होती थी.. जैसे-जैसे बड़े होते गए वैसे-वैसे ज्ञान प्राप्त होने लगा लेकिन कभी-कभी स्कूल में कम्पास भूल आते तभी माँ मुझे बहुत डाँटती थी। फिर स्कूल में ब्रेक के समय सभी दोस्त एक साथ डिब्बे खाने बैठते और डिब्बे बांटते, उसमे कई दोस्तों के माँ के हातों से बना खाना स्वादिस्ट लगता था।

जैसे-जैसे बड़े होते गए वैसे-वैसे हमारा मस्ती करना बढ़ता गया और मस्ती ज्यादा करने के वजह से माता-पिता को स्कूल में बुलाने को कभी-कभी अध्यापक/शिक्षक हमें बोलते थे, फिर हमें घर पर डॉट पड़ती I लेकिन कुछ शिक्षक इतने अच्छे थे कि, स्कूल की याद आते ही उनका नाम हमेशा याद आ जाता है..... स्कूल एक ऐसी जगह है, जहां जाने को थकान महसूस होती थी, पर जब स्कूल खत्म हो जाए तो, बाद में यादें बहुत प्यारी होती है। स्कूल के पहले दिन मैं यह देखकर बहुत रो रहा था कि, मेरी माँ आसपास नहीं थी, लेकिन धीरे-धीरे मुझे इसकी आदत हो गई। ढेर सारी मस्ती, शरारतें, झगड़े और टीचर द्वारा पिटाई भी हुई I

क्लास में किसीने होमवर्क नहीं किया तो, सभी को एक बार मार पड़ती थी, और फिर रोते हुए बैठ जाते थे, क्योंकि मैडम बहुत ही स्ट्रीक थी। जब अपना होमवर्क पूरा नहीं होता था, तब पिटने से बचने के लिए मैडम से झूठ बोलकर मार खाने से बच जाते थे। खेल की बात आइ तो सभी खेलों में भाग

लेते थे, और अपने समूह का समर्थन करते थे, और जीतने के बाद दूसरे समूह को चिढ़ाते थे। शारीरिक प्रशिक्षण का क्लास बहुत मजेदार होता था, क्योंकि वहीं पर हमें सबसे ज्यादा मस्ती करने को मिलता था।

स्कूल में हर तरह के त्यौहार मनाए जाते थे और हमें उस त्यौहार के लिए उस तरह के कपड़े पहनने के लिए मिलते थे। बड़े होने पर जब हमें 'शिक्षक दिवस' पर शिक्षक बनने का मौका मिला तब हमें पता चला की शिक्षक बनना कोई आसान बात नहीं है।

अंत में सैंडऑफ़ पार्टी कि व्यवस्था की गई थी, जिसमे सभी शिक्षकों और हम लोगों की आँखों में आँसू आ गए थे। क्योंकि स्कूल और शिक्षकों की आदत हो गई थी, और हमेशा के लिए अलविदा कहना बहुत मुश्किल हो रहा था। लेकिन ढेर सारे फोटो के साथ हमारी स्कूली जिंदगी खत्म हो गई। लेकिन यादें हमेशा बनी रहती हैं.....

जब स्कूल और कॉलेज खत्म हो जाते हैं तब जाके असल जिंदगी शुरू होती है, जब जिम्मेदारियां आती हैं तो पता चलता है कि चीजें उतनी आसान नहीं हैं जितनी दिखती हैं। जब आपको काम के सिलसिले में इधर-उधर भटकना पड़ता है तो आपको एहसास होता है कि आपने इतने सालों में

कितना आराम किया। जब आप पैसे खर्च करने के बारे में सोचना शुरू करते हैं, तो आपको एहसास होता है कि आपने कितना पैसा मुफ्त में खर्च किया I

आज उन दोस्तों की याद आई जो शुरू से मस्ती और गम में साथ थे, जिनसे हमारा झगड़ा हुआ और थोड़ी देर बाद सॉरी बोलकर फिर से एक हो गए। सब कुछ अच्छा चल रहा था यार, कोई उम्मीद नहीं थी, कोई भेदभाव नहीं था, क्योंकि हम बचपन में जितना सीखते हैं, वैसा ही करते हैं और वे विचार हमेशा के लिए हमारी स्मृति में रहते हैं। स्कूल ने मुझे बहुत कुछ सिखाया, मुझे सबक दिया, मुझे एक इंसान के रूप में जीना सिखाया, मुझे अनुभव दिए, मैं इन यादों को कभी नहीं भूल सकता, नई दुनिया, नए लोग, नए रिश्ते लेकिन एक चीज वही रहती है वो है पढ़ाई I

इमरान खाटीक
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

डायरी

लिखता तो बहुत हूं अपनी डायरी में भाव मन के।

काश! कोई पढ़ पाए खुसूसियत से अरमां मेरे दिल के।

परेशां भी होता हूं और ग़मख़ार भी, जंग भी होती है ख़ुद से और प्यार भी।।

जीतता हूं कई दफ़ा और होती है हौसलों की हार भी।

यहां जिंदगी का हर एक लम्हा गहरा सबक दे जाता है,

वक्त की, कभी गिरती है मार भी, तो कभी मिलते हैं फूलों के हार भी ।।

अपने अच्छे बुरे कर्मों का भी हिसाब रखता हूं,

जो गलत है उसके सामने अपनी बात रखता हूं।

गमज़दा तो बहुत है इमरान अपने समाज के हालात पर,

अब सजदों में ही खुदा के सामने अपनी डायरी के अल्फ़ाज़ रखता हूं।।

श्री रवि कुमार
लेखापरीक्षक

समय

समय का सही उपयोग करना एक कला है। वे लोग जो समय का अच्छी तरह से उपयोग कर पाते हैं, वे सफलता की सीढ़ी पर ऊंचाईयों को छू सकते हैं। हमारे जीवन में समय एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, इसलिए हर व्यक्ति के जीवन में समय का महत्त्व होता है। समय एक अनमोल धन है जो हमें दिया गया है। यह हमारी जिंदगी की सबसे मूल्यवान संपत्ति है जो एक बार गुजर जाने के बाद वापस नहीं आती। समय का महत्त्व हमेशा समझना चाहिए क्योंकि गुजरा हुआ समय कभी वापस नहीं आ सकता है। हमें अपने लक्ष्यों और कार्यों को समय पर पूरा करने के लिए आतुर होना चाहिए। समय बहुत कीमती है और हमें इसे किसी भी तरह से बर्बाद नहीं करना चाहिए। सच ही कहा गया है कि, हम अपना खर्च किया हुआ पैसा तो कमा सकते हैं लेकिन जो समय हमने खोया है उसे वापस नहीं पाया जा सकता । यही बात समय को दुनिया के हर कीमती चीजों से अधिक मूल्यवान बनाता है। इसलिए, हमें समय का अच्छी तरह से सदुपयोग करना चाहिए।

"यदि आप समय बर्बाद करते हैं,

तो समय आपको बर्बाद कर देगा।"

समय सीमित होता है। हमारे पास प्रत्येक दिन 24 घंटे होते हैं और उसके बाद यह समय हमारे लिए अनुपलब्ध हो जाता है। इसलिए, हमें समय को सवारी के रूप में उपयोग करना सीखना चाहिए ताकि हम अपने जीवन के लक्ष्यों की प्राप्ति कर सकें। समय को महत्त्व देना हर व्यक्ति के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण होता है। यह दुनिया की सबसे कीमती वस्तु, पदार्थ आदि से भी कीमती चीज़ है. समय के सदुपयोग से हम अपना कल बेहतर कर सकते है। इससे हमें और समाज को बेहतर कल की ओर बढ़ने में मदद मिलेगी। इसके अलावा, हमें अपने बच्चों को समय का महत्व और उसका सदुपयोग सिखाना चाहिए। इसके अलावा, समय बर्बाद करने से आप बाकि लोगों से काफी पीछे चले जाते है।

समय के प्रभावी उपयोग के लिए हमें कुछ कुछ बातों पर विचार करना चाहिए जो हमें जीवन भर मदद करेंगे। इस उपयोग में हम समय पर लक्ष्य पूरा करना, अपनी कार्य सूची को समय के आधार पर तैयार करना, समय पर सोना , जागना एवं खेलकूद भी काफी मायने रखता है। शुरुआत में यह एक उबाऊ काम लगेगा लेकिन जब हम इसे नियमित रूप से करेंगे तो हमें महसूस होगा कि यह न केवल हमारी उत्पादकता बढ़ाने में मदद करता है। अंततः, यह हमलोगों को जीवन में सफलता हासिल करने के लिए मजबूर करेगा। उत्पादक होने का मतलब यह नहीं है कि आप हर बार खुद को अलग-अलग कार्यों में व्यस्त रखें। उचित नींद लेना और व्यायाम करना भी अत्यंत आवश्यक है। उचित व्यायाम और नींद शरीर और दिमाग के बीच संतुलन बनाए रखती है जो सफल और कुशल होने के लिए बहुत महत्वपूर्ण है।

साथ ही इससे जीवन में कुछ हासिल करने की इच्छाशक्ति भी बढ़ेगी। कार्य को प्राथमिकता देना समय प्रबंधन का एक बहुत प्रभावी तरीका है। इससे हमलोगों को विभिन्न कार्यों का महत्व भी पता चलेगा। इसके अलावा, यदि हमारा ग्रुप एक बार में एक जैसी गतिविधि करता है तो इससे हमारी सफलता भी काफी बढ़ती है।

हालाँकि अधिकांश लोगों को यह समझ में नहीं आता कि समय कितना मूल्यवान है जब तक कि उन्होंने इसे खो नहीं दिया। इसके अलावा, दुनिया में ऐसे लोग भी हैं जो समय के बजाय पैसे को ज्यादा महत्व देते हैं क्योंकि उनके अनुसार समय कुछ भी नहीं है। लेकिन, उन्हें इस बात का एहसास नहीं है कि समय ने ही उन्हें पैसा कमाने का मौका दिया है। इसके अलावा समय ने हमें सुख-समृद्धि भी दी है और इसके विपरीत दुःख और शोक भी दिये हैं।

हम कह सकते हैं कि समय ईश्वर का सबसे बड़ा उपहार है। इसके अलावा, समय का उपयोग करने की कला में प्राथमिकताएं निर्धारित करना भी महत्वपूर्ण है। हमें अपने लक्ष्यों और कार्यों को महत्त्व देना चाहिए और उन्हें समय के आधार पर अच्छी तरह से प्राथमिकता क्रमबद्ध करना चाहिए। इससे हम अपने समय को उच्चतम मूल्य वाले कार्यों के लिए व्यवस्थित कर सकते हैं और उन्हें प्राप्त करने के लिए अधिक समय और ध्यान दे सकते हैं।

सुश्री फातेमा हवेलीवाला
लेखापरीक्षक

मैं माँ हूँ...

मैं माँ हूँ!
तुझे बचपन में समझाया भी है,
और वक़्त आने पर मारा भी,
दर्द तुझे देने से पहले 10 बार खुद को रोका भी,
तेरी भलाई का हर बार पहले सोचती हूं,
माँ हूँ तेरी ही माँ हूँ!

तेरी पसंद की चीज़े भी बनाई,
तेरे दोस्तों के पसंद का भी ख्याल रखा,
तुझे अपनी छोटी सी दुनिया बनाई,
और तुझे अपनी दुनिया ढूंढने का मौका भी दिया,
तेरे दोस्तों की खबर भी रखी,
और गलत संगत से तुझे दूर रहने को भी कहा,
तेरे घर आने का वक्त भी पूछती हूं,
और तू किधर है, ये पता भी हर वक़्त रखती हूँ,
माँ हूँ तेरी ही माँ हूँ!

तेरे लिए मेरे लिए गए फैसले गलत हो सकते है,
पर इरादे गलत कभी नहीं होते...
तेरे लिए ना कभी मेरा प्यार बंटा है, ना ही कभी ध्यान,
तुझे दुसरो की तरक्की सुनाते आगे बढ़ने के लिए भी कहती हूं,
और दूसरे के सामने तेरी तरक्की सीना तान कर के बताती हूं,

तेरी हर छोटी ख़ुशी, कामयाब को जश्न की तरह मनाती हूँ,
माँ हूँ तेरी ही माँ हूं!

कभी-कभी लगता होगा तुझे ये कैसी माँ मिली है,
हर बार कुछ सिखाती रहती है, पीछे पड़ी रहती है,
जो काम बाकी है अलार्म की तरह याद दिलाती रहती है,
तेरे दिए हर ताने का जवाब है, तेरी कही हर बात का जवाब है,
पर तुझे नीचे करके खुद ऊपर उठना नही चाहती,
माँ हूँ तेरी ही माँ हूं!

नही आता मुझे स्मार्ट फोन चलाना,
नही आता मुझे तेरी मॉडर्न जिंदगी का हिस्सा बनना,
पर सिखने को तैयार हूं,
वैसे ही सिखाना जैसे बचपन में मैने माँ बोलना सिखाया,
वैसे ही सिखाना जैसे उंगली पकड़ के चलना सिखाया,
सब्र और बहुत प्यार से.....
माँ हूँ तेरी ही माँ हूं!

जो तुने मुझे खुद से दूर भी कर दिया, फिर भी तेरे साथ हूं,
अपना रिश्ता कितना ही कमजोर क्यों ना हुआ,
वो नाज़ुक दौर को पकड़े रखुंगी,
अंधेरे में तेरा उजाला बनुंगी ,
और वक्त आने पर अंधेरे को खुद में समा लुंगी,
तेरी हर गलती के बाद भी तेरे साथ खड़ी हूं,
ऊंचाइयों में भी तेरे साथ हूं, तेरे कमजोर लम्हों में तेरी ढाल हूं,
माँ हूँ तेरी ही माँ हूं!

तू इस दिल में बसता है,
तू तो मेरा ही हिस्सा है,
तुझे जिंदगी दी है,
तू मेरी जिंदगी है,

पर तुझे ये कैसे पता होगा?
क्योंकि मै तो कभी ये कहती ही नही,
कभी जताती ही नही,
मेरी चुप्पी को मेरी मजबुरी मत समझ लेना,
मैं तेरी माँ हूं बेटा!
इसे गलती से भी भूला मत देना...

श्री सचिन चौहान
लेखापरीक्षक

सपने और दुनिया

सुनो !

अपने सपने त्याग कर ,

क्या जीत पाओगे दुनिया सारी ?

खुद ये झूठे सपने दिखा कर पूछते हो ,

क्यों आंखें नम है तुम्हारी ?

बाहर से दिखाते हो नकली मुस्कान

पर दिल तुम्हारा आज भी भारी ,

क्यों ?

क्योंकि बंद कर दी तुमने अपने सपनों की
अलमारी ।

आजकल लोगों को अपने सपनों से ज्यादा

9 से 5 वाली भागदौड़ है प्यारी ,

शायद भेड़ चाल में कहीं खो

गए, या शायद बढ़ गयी है

जिम्मेदारी

जिसे दे खो वो दुखी है

क्यों ?

क्योंकि बंद कर दी सबने अपने सपनों की
अलमारी ।

सेवानिवृत्ति

श्रीमती कल्याणी विनोद वेदपाठक, पर्यवेक्षक अपना सेवा काल पूर्ण करने के पश्चात दिनांक 29/02/2024 को सेवानिवृत्त हुई।

हल्दी कुमकुम

महिला दिवस

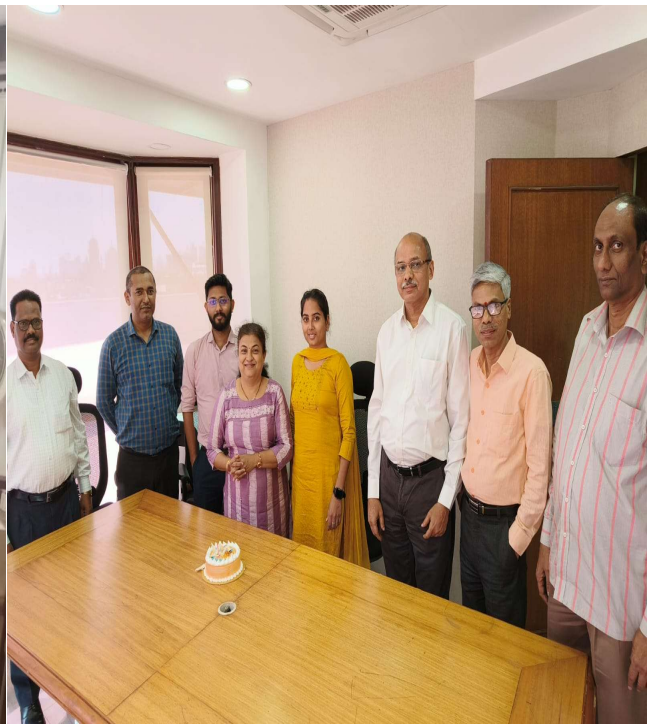

होली

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
महानिदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय
पूर्व तट रेलवे, तीसरी मंजिल, रेल सदन
भुवनेश्वर -751017 (ओड़िशा)

सत्यमेव जयते

स.- रा.भा.अ./पत्रिका/2023-24/

E-No/1751402/Admin
04 APR 2024

सेवा में,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन),
कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा,
सी-25, ऑडिट भवन, 8वाँ तल, बांद्रा कुर्ला कॉम्प्लेक्स(पूर्व),
मुंबई - 400051
ईमेल- admin.mum.pdca@cag.gov.in

विषय- ई-पत्रिका **"लेखापरीक्षा ज्ञानोदय"** के **14वें** संस्करण की प्राप्ति के संबंध में।

महोदय / महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित त्रैमासिक हिंदी ई-पत्रिका **"लेखापरीक्षा ज्ञानोदय"** का **14वाँ** संस्करण प्राप्त हुआ, एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका का कलेवर व रुपरेखा अत्यधिक आकर्षक है। इस पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ उत्कृष्ट, ज्ञानवर्धक और रोचक हैं, विशेषकर निम्नलिखित रचनाकारों की रचनाएँ अत्यधिक प्रशंसनीय हैं:-

क्रम	रचनाकार	रचनाएँ
1.	सुश्री पूजा साव	जलवायु परिवर्तन
2.	श्री इमरान खटीक	तेरी ना, नहीं
3.	सुश्री प्रियंका त्रिवेदी	चिरशांति !
4.	श्री अरुण कुमार साव	शिक्षा का महत्व

इस पत्रिका को सफल एवं उच्चकोटि बनाने में योगदान देने वाले सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएँ।

यह पत्र निदेशक लेखापरीक्षा के अनुमोदन से जारी किया गया है।

भवदीया,

Signed by Kirti Shree
Date: 03-04-2024 11:20:05

(कीर्ति श्री)
हिंदी अधिकारी

दूरभाष सं.-0674-2303511 ई-मेल- pdarlyecoastr@cag.gov.in / rajbhasha.ecorly@cag.gov.in

---

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी) हरियाणा,
लेखा भवन, प्लाट नं. 4 व 5, सैक्टर 33-बी चण्डीगढ़-160020
टेलीफोन नं. 2610957, 2613211, 2615382
फैक्स नं. 0172-2603824
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (A&E) HARYANA
LEKHA BHAWAN PLOT NO- 4 & 5, SECTOR 33-B
CHANDIGARH-160020
E-mail:- agaeharyana@cag.gov.in
EPABX No. 2610957, 2613211, 2615382 Fax No- 0172-2603824

सत्यमेव जयते

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

हिंदी कक्ष/पत्रि.प्रति./2023-24/289
दिनांक: 28.02.2024

सेवा में,

वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन),
कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा,
मुंबई।

महोदय/महोदया,

विषय : तिमाही हिंदी ई-पत्रिका 'लेखापरीक्षा ज्ञानोदय' के 14वें संस्करण के प्रेषण के संबंध में।

आपके कार्यालय के पत्र दिनांक 31.01.24 के द्वारा आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित तिमाही हिंदी ई-पत्रिका 'लेखापरीक्षा ज्ञानोदय' के 14वें संस्करण हिंदी पखवाड़ा समारोह विशेषांक की ई-प्रति सधन्यवाद प्राप्त हुई। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ उच्चस्तरीय, ज्ञानवर्धक एवं प्रशंसनीय हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ बहुत ही आकर्षक एवं मनमोहक है। पत्रिका में समाविष्ट श्रीमति सुवर्णा विचारे का लेख 'पर्वतारोहण' बहुत ही ज्ञानवर्धक लेख है।

इसके अतिरिक्त श्री जय राम सिंह की कविता 'चार मुक्तक एवं सुश्री पूजा साव की कविता 'स्वाभूतानंदी हूँ' पठनीय हैं।

पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन हेतु संपादक-मंडल बधाई के पात्र हैं। पत्रिका के उज्जवल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

E-No/1682351/Admin
12 MAR 2024

भवदीय,

28.02.24
(डॉ. सुधा तिवारी)
हिंदी अधिकारी

भारतीय लेखापरीक्षा तथा लेखा विभाग
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (पर्यावरण एवं वैज्ञानिक विभाग)
मुंबई शाखा, नव भवन, आर के मार्ग, बल्लार्ड इस्टेट, मुंबई
INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT
Director General of Audit, (Environment and Scientific Departments)
Mumbai Branch, Nav Bhavan, R. K. Marg, Ballard Estate, Mumbai-400 001
Email: bresdmumbai@cag.gov.in
Contact No.: 022- 2082 -3903/ 2146/ 4609, Fax: 022-2263-2414

सत्यमेव जयते

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

सं.स्था./XIII(14)/विविध पत्रिकाएँ/भाग-III/2023-24/ दिनांक:

सेवा में,
वरिष्ठ लेखपारीक्षा अधिकारी/प्रशासन,
कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा
मुंबई- 400 051

विषय: हिन्दी पत्रिका **"लेखापरीक्षा ज्ञानोदय"** के 14वें अंक की ई-प्रति की पावती के संबंध में।

महोदय/महोदया,

उपरोक्त विषय के संदर्भ में आपके कार्यालय पत्र ईमेल दिनांक: 31.01.2024 को संज्ञान में लें। इस संबंध में आपके कार्यालय से हिन्दी पत्रिका 'लेखापरीक्षा ज्ञानोदय' के चौथे अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, जिसके लिए यह कार्यालय आपका आभारी है।

पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं सराहनीय एवं प्रशंसनीय हैं। 'पर्वतारोहण', 'स्वास्थ्य और स्वच्छता', 'चार मुक्तक', 'तेरी न नहीं' आदि रचनाएं विशेष रूप से पठनीय एवं रुचिकर हैं। पत्रिका के प्रकाशन हेतु संपादक मण्डल को बधाई एवं इसकी प्रगति और अगले अंक के प्रकाशन हेतु शुभकामनाएँ।

भवदीय,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/ प्रशासन

Signed by Sudeb Sikder
Date: 28-02-2024 12:00:20

E-No/1667109/Admin
06 MAR 2024

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय व्यय) नई दिल्ली -110002

सं.रा.भा.अ/2-9/प्रशंसा पत्र/2023-24/ ७२०
दिनांक: 23.02.2024

सेवा में

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन)
कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा, मुंबई
सी-25, ऑडिट भवन,8वां तल, बांद्रा कुर्ला कॉम्प्लेक्स बांद्रा (पूर्व), मुंबई-400051

विषय- हिन्दी त्रैमासिक ई-पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के 14वें अंक की पावती सह प्रशंसा पत्र I

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित तिमाही हिन्दी पत्रिका **"लेखापरीक्षा ज्ञानोदय"** के 14वें अंक की ई-पत्रिका ई-मेल द्वारा इस कार्यालय को प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका का आवरण आकर्षक है साथ ही इसकी साज-सज्जा मुद्रण भी अति उत्तम है। पत्रिका में सभी लेख, कविताएं, प्रेरक प्रसंग आदि पठनीय, रोचक एवं ज्ञानवर्धक है। पत्रिका में सभी रचनाएं उत्तम स्तर की है।

कार्यालय के प्रायः सभी वर्ग के कार्मिकों ने अपनी मौलिकता से पत्रिका को सुसज्जित किया है। पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (राजभाषा)

E-No/1667045/Admin
06 MAR 2024

प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) का कार्यालय, ओडिशा, पुरी शाखा, पुरी
PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (A&E), ODISHA, PURI BRANCH, PURI
फोन नं.-06752-222706, फ़ैक्स नं.-06752-222046

सं.-प्रशंसा पत्र/09/2023-24/63 — दिनांक:- 05/03/2024

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी, प्रशासन
कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा
मुंबई- 400051

विषय : तिमाही हिन्दी ई-पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय " 14 वें संस्करण की प्राप्ति।

महोदय,

आपकी तिमाही हिन्दी ई-पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय " 14 वें संस्करण की प्राप्ति हुई। धन्यवाद।

"लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" उत्कृष्ट रचनाओं का सुन्दर संकलन है। पत्रिका के मुख पृष्ठ सहित अन्य कार्यक्रमों के चित्र अत्यंत सुखद व अनुभूतिपूर्ण हैं। राजभाषा से संबंधित सभी समारोह एवं गतिविधियों के चित्र पत्रिका को और अधिक सुंदरता प्रदान कर रहे हैं। पत्रिका में निहित संपूर्ण रचनाएँ पठनीय, रोचक, ज्ञानवर्धक एवं महत्वपूर्ण संदेशों से परिपूर्ण है। इनमें से "पर्वतारोहण", "स्वभूतानंदी हूँ" एवं "चिरशांति ", विशेष अच्छी हैं। आशा है कि यह पत्रिका आगे भी अपने रोचक विषयों से पाठकों का ज्ञानवर्धन एवं राजभाषा के प्रचार-प्रसार में सार्थक मंच उपलब्ध कराती रहेगी।

पत्रिका के संपादक मण्डल के सभी सदस्यों एवं पत्रिका के उज्जवल भविष्य की हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय

(सुदर्शन साहू)
वरिष्ठ लेखा अधिकारी, हिन्दी कक्ष

E-No/1682138/Admin
12 MAR 2024

12 MAR 2024

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा,
उद्योग एवं कॉर्पोरेट कार्य
ए.जी.सी.आर. भवन, आई.पी. एस्टेट,
नई दिल्ली–110 002

OFFICE OF THE DIRECTOR GENERAL OF AUDIT,
INDUSTRY AND CORPORATE AFFAIRS
A.G.C.R. BUILDING I.P. ESTATE,
NEW DELHI-110 002

सं. प्रशा/रा.भा./बाह्य पत्रि./23/2023-24/32 — दिनांक 29.02.2024

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन)
कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा मुंबई
सी-25 लेखापरीक्षा भवन 8 वां तल बान्द्रा-कुर्ला परिसर
मुंबई 400 051

विषयः तिमाही हिंदी ई- पत्रिका लेखापरीक्षा ज्ञानदेय के 14 वें संस्करण की पावती के संबंध में।

महोदय/महोदया,

उपर्युक्त विषय से संबंधित आपके कार्यालय की तिमाही ई- पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय के 14 वें संस्करण की ई प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद।

पत्रिका में समाहित सभी लेख रचनाएं कविता आदि रोचक, पठनीय एवं प्रंशसनीय है। विशेष रूप से सुश्री प्रियंका त्रिवेदी द्वारा रचित कविता "चिरशान्ति" उल्लेखनीय है। पत्रिका के पत्रिका के संपादक मंडल को सफल प्रकाशन हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

संपादक एवं हिंदी अधिकारी
राजभाषा

E-No/1682210/Admin
12 MAR 2024

दूरभाष / Phone : +91-11-23702357, फैक्स / Fax : +91-11-23702359, E-mail : pdaica@cag.gov.in

---

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय व्यय)
Office of the Director General of Audit (Central Expenditure)
डी जी ए सी आर भवन, इन्द्रप्रस्थ एस्टेट, नई दिल्ली–110 002
DGACR Building, Indraprastha Estate, New Delhi -110 002

सत्यमेव जयते

सं.रा.भा.अ/2-9/प्रशंसा पत्र/2023-24/720 — दिनांकः 29.02.2024

29 FEB 2024

सेवा में

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन)
कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा, मुंबई
सी-25, ऑडिट भवन,8वां तल, बांद्रा कुर्ला कॉम्प्लेक्स बांद्रा (पूर्व), मुंबई-400051

विषय- हिन्दी त्रैमासिक ई-पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के 14वें अंक की पावती सह प्रशंसा पत्र ।

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित तिमाही हिन्दी पत्रिका **"लेखापरीक्षा ज्ञानोदय"** के 14वें अंक की ई-पत्रिका ई-मेल द्वारा इस कार्यालय को प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका का आवरण आकर्षक है साथ ही इसकी साज-सज्जा मुद्रण भी अति उत्तम है। पत्रिका में सभी लेख, कविताएं, प्रेरक प्रसंग आदि पठनीय, रोचक एवं ज्ञानवर्धक है। पत्रिका में सभी रचनाएं उत्तम स्तर की है।

कार्यालय के प्रायः सभी वर्ग के कार्मिकों ने अपनी मौलिकता से पत्रिका को सुसज्जित किया है। पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोतर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (राजभाषा)

E-No/1681749/Admn
12 MAR 2024

12 MAR 2024

Ph. : 91-11-23702422
Fax : 91-11-23702271
e-mail : dgace@cag.gov.in
Website: https://cag.gov.in/cen/new-delhi-iii/ten

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
INDIAN AUDIT & ACCOUNTS DEPARTMENT
महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) का कार्यालय, मुंबई
O/o the DIRECTOR GENERAL OF AUDIT (CENTRAL),MUMBAI
C-25,Audit Bhavan, Bandra Kurla Complex, Mumbai- 400 051
e-mail – pdacentralmumbai@cag.gov.in

सत्यमेव जयते

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

सं.म.नि.ले.प./कें./रा.भा.अ./पत्रिका लेखापरीक्षा ज्ञानोदय/2023-24/33 — दिनांकः 05.02.2024

सेवा में
व.ले.प.अ./प्रशासन
महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा का कार्यालय, आँठवा तल
ऑडिट भवन, बी.के.सी. बांद्रा (पूर्व),मुंबई -400051

विषय :- त्रैमासिक हिंदी पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" 14वें अंक की प्राप्ति के संबंध में।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित वार्षिक हिंदी पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" 14वें अंक की प्रति प्राप्त हुई, एतदर्थ धन्यवाद । इसके आवरण पृष्ठ, साज-सज्जा एवं अन्य कार्यालयीन गतिविधियों से संबंधित छायाचित्र अत्यंत मनोरम है। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएँ अत्यंत रोचक, ज्ञानवर्धक, मनोरंजक, पठनीय एवं सराहनीय है। निम्नलिखित रचनाकारों के रचनाएँ विशेष उल्लेखनीय हैं:-

क्र.सं	रचनाकार	रचनाएँ
1.	सुश्री प्रियंका त्रिवेदी	चिर शांति
2.	श्री अरुण कुमार साव	शिक्षा का महत्व
3.	सुश्री पूजा कुमारी साव	स्वभूतानंदी हूँ, जलवायु परिवर्तन
4.	सुश्री स्वपना फुलपाडिया	पर्वतारोहन
5.	श्री जयराम सिंह	चार मुक्तक
6.	श्री सिंजय कोटलगी	स्वास्थ और स्वच्छता

सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु बधाई एवं पत्रिका के निरंतर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ ।

भवदीया

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (राजभाषा)

E-No/1591984/Admin
12 FEB 2024

कार्यालय प्रधान महालेखाकार
(लेखापरीक्षा-II), पश्चिम बंगाल
Office of the Pr. Accountant General
(Audit–II), West Bengal

संख्या :- हिंदी कक्ष/पत्रिका पावती/176 दिनांक:- 07/02/2024

07 FEB 2024

सेवा में,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/प्रशासन
कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा, मुंबई,
सी-25, ऑडिट भवन, बांद्रा कुर्ला कोम्प्लेक्स, बांद्रा पूर्व, मुंबई – 400051.

To,
Sr. Audit Officer/Admn.
O/o The Director General of Commercial Audit, Mumbai
C-25, Audit Bhavan, Bandra Kurla Complex, Bandra East, Mumbai-400051

विषय: हिन्दी त्रैमासिक ई-पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के 14वें संस्करण के प्रेषण के संबंध में।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित **हिन्दी त्रैमासिक ई-पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के 14वें संस्करण** की प्राप्ति हुई। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं ज्ञानवर्धक एवं रोचक हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं पत्रिका में प्रकाशित छायाचित्र अत्यंत आकर्षक और मनमोहक है। साथ-ही पत्रिका का कलेवर भी अत्यंत आकर्षक है। कविताएं एवं लेख भी भावपूर्ण, सार्थक तथा मन को छू लेने वाली हैं। इनमें से जो रचनाएँ अति उत्तम लगीं, वो हैं- चार मुक्तक, स्वाभूतानंदी हूँ, चिरशांति, शिक्षा का महत्त्व, तेरी ना नहीं आदि।

आशा करता हूँ कि पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य तथा आगामी अंकों के लिये बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

E-No/1608931/Admin

16 FEB 2024

भवदीय,

व. लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी कक्ष

सी.जी.ओ.कम्प्लेक्स,डी.एफ.ब्लॉक, साल्ट लेक,कोलकाता- 700 064
3rd MSO Building, 5th Floor, CGO Complex, DF Block, Salt Lake, Kolkata - 700 064.
Phone: (033) 2337-4916; FAX: (033) 2337-7854, e-mail: agauwestbengal2@cag.gov.in

---

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा),
पंजाब, चंडीगढ़-160017
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT) PUNJAB,
CHANDIGARH-160017
फोन : 0172-2783168, फैक्स 0172-2703149
Email-agaupunjab@cag.gov.in

क्रमांक-हि.क./समीक्षा/23-24/131 दिनांक: 09/02/2024

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/प्रशासन
कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा,
मुंबई-400051

विषय: तिमाही हिन्दी ई-पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के 14वें संस्करण की समीक्षा।

महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिंदी पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" का 14वाँ संस्करण प्राप्त हुआ, एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका का कलेवर व रुपरेखा अत्यधिक आकर्षक है। इस पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ उत्कृष्ट, ज्ञानवर्धक और रोचक हैं, विशेषकर निम्नलिखित रचनाकारों की रचनाएँ प्रशंसनीय हैं:-

क्रम	रचनाकार	रचनाएँ
1	श्रीमती सुवर्णा विचारे	पर्वतारोहण
2	श्री जयराज सिंह	चार मुक्तक
3	सुश्री पूजा साव	स्वाभूतानन्दी हूँ
4	श्री इमरान खाटीक	तेरी ना, नही
5	श्री अरुण कुमार साव	शिक्षा का महत्व

इस पत्रिका को सफल एवं उच्चकोटि बनाने में योगदान देने वाले सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीया,

(हिंदी अधिकारी)

E-No/1610977/Admin

19 FEB 2024

क्षेत्रीय क्षमता निर्माण एवं ज्ञान संस्थान
भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग
20, सरोजनी नायडू मार्ग, प्रयागराज - 211001
REGIONAL CAPACITY BUILDING & KNOWLEDGE INSTITUTE
Indian Audit & Accounts Department
20, Sarojini Naidu Marg, Prayagraj – 211001
Phone : 2421364, 2421063, 2624467 Fax : 0532-2423485

पत्रांक - क्षे.क्ष.नि.ज्ञा.सं.(प्र.)/पत्रिका पावती(132)/2023-24/502 दिनांक : 06.02.2024

सेवा में,

वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी/प्रशासन
कार्यालय- महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा,
मुंबई - 400051

विषय:- हिंदी पत्रिका 'लेखापरीक्षा ज्ञानोदय' के 14वें अंक की पावती।

संदर्भ:- पत्रांक डीजीसीए/प्रशा./का.प./2/373 दिनांक 31.01.2024

महोदय,

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'लेखापरीक्षा ज्ञानोदय' के 14वें अंक की प्राप्ति हुई। इसके लिए सादर धन्यवाद ।

पत्रिका का साज-सज्जा आकर्षक है। पत्रिका में सम्मिलित समस्त रचनाएं प्रशंसनीय हैं। विशेषकर 'लेखापरीक्षक', 'स्वास्थ और स्वच्छता', 'स्वाभूतानन्दी हूँ', 'चिरशान्ति' एवं 'तेरी ना, नहीं' पठनीय, रुचिकर एवं सराहनीय हैं। पत्रिका में सम्मिलित कार्यालयीन गतिविधियों के चित्र पत्रिका की शोभा को और बढ़ा रहें हैं।

पत्रिका के बेहतरीन संपादन हेतु संपादक मंडल को हार्दिक बधाई एवं पत्रिका की निरंतर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय,

वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी/सलाहकार

E-No/1613768/Admin

19 FEB 2024

कार्यालय प्रधान महालेखाकार(लेखापरीक्षा-II), तमिलनाडु एवं पुदुचेरी,
लेखापरीक्षा भवन, 361, अण्णा सालई, तेनामपेट, चेन्नई - 600 018

सं.प्र.मले.(लेप-II.)/हि.अ./7-38/ प्रशंसा पत्र /2023-24/ 59 दिनांक: 06.02.2024.

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन),
कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा,
मुंबई-51

विषयः तिमाही हिंदी ई-पत्रिका "**लेखापरीक्षा ज्ञानोदय**" के 14वें अंक की अभिस्वीकृति ।

महोदय,

आपके कार्यालय से प्रकाशित तिमाही हिंदी ई-पत्रिका "**लेखापरीक्षा ज्ञानोदय**" के 14वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई । एतदर्थ धन्यवाद ।

पत्रिका में संकलित सभी रचनाएं पठनीय एवं सराहनीय हैं । राजभषा संबंधी गतिविधियों एवं कार्यालय में हो रही अन्य गतिविधियों के सचित्र प्रकाशन से पत्रिका और आकर्षक बन गयी है । पत्रिका के इस अंक के प्रकाशन से जुड़े सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल का प्रयास प्रशंसनीय हैं। पत्रिका के निरंतर प्रकाशन के लिए हमारी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीया,
हस्ता/-

(वी. चित्रा)
हिंदी अधिकारी,
कार्यालय महालेखाकार(लेखापरीक्षा-II),
तमिलनाडु एवं पुदुचेरी

E-No/1613739/Admin

19 FEB 2024

कार्यालय- महालेखाकार (लेखापरीक्षा)-II, महाराष्ट्र,नागपुर 440001
सं.हिंदी अनुभाग/प्रतिक्रिया/22/2023-24/जा.क्र.100
दिनांक: -02/02/2024

सेवा में,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन)
कार्यालय- महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा
महाराष्ट्र, मुंबई -400051
विषय:- हिंदी पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के 14वें अंक की प्रतिक्रिया के संबंध में ।

महोदया,

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के 14वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद । पत्रिका में समाविष्ट सभी लेख, कविताएं, उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक हैं। विशेषकर श्रीमती स्वपना फुलपाड़िया, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी की कविता "लेखापरीक्षक", श्री संजय कोटलगी, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी का लेख "स्वास्थ्य और स्वच्छता", सुश्री पूजा साव, कनिष्ठ अनुवादक का लेख "जलवायु परिवर्तन" आदि उल्लेखनीय एवं सराहनीय हैं ।

पत्रिका का मुखपृष्ठ अत्यंत आकर्षक है। पत्रिका के रचनाकारों एवं संपादक मंडल को सफल संपादन तथा प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई एवं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए हमारे कार्यालय की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीया,
हिंदी अधिकारी

E-NO/1613705/Admin
19 FEB 2024

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), हरियाणा,
प्लॉट नं. 5, सैक्टर 33-बी,
दक्षिण मार्ग, चण्डीगढ़-160 020
OFFICE OF THE PR. ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT), HARYANA
PLOT NO.5, SECTOR 33-B,
DAKSHIN MARG, CHANDIGARH-160 020
सत्यमेव जयते
SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थं सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

सं.हिंदी कक्ष/पत्रिका/प्रतिक्रिया/2023-24/अं-7 दिनांक/Dated 06.02.2024

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/प्रशासन

कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा

मुंबई ।

विषय तिमाही हिन्दी ई-पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के 14वें संस्करण का प्रेषण।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय की गृह-पत्रिका 'लेखापरीक्षा ज्ञानोदय' की ई-प्रति प्राप्त हुई हैं। एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में संकलित सभी रचनाएँ पठनीय, रुचिकर एवं प्रेरणादायक हैं ।पर्वतारोहण, जलवायु परिवर्तन, शिक्षा का महत्व, स्वास्थ्य और स्वच्छता आदि रचनाएँ काफी ज्ञानवर्धक हैं।

आशा है पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उतरोत्तर प्रगति जारी रहेगी। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य और आगामी अंको के लिए बहुत-बहुत शुभकामनायें ।

भवदीय
हिन्दी अधिकारी

E-NO/1613808/Admin
19 FEB 2024

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) म.प्र.
53, अरेरा हिल्स, होशंगाबाद रोड, भोपाल- 462011
क्र.हि.क./फा-7/ जावक - 76 दिनांक08.02.2024

प्रति,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी /प्रशासन
कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा
मुंबई- 400051

विषय :तिमाही हिन्दी ई-पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के 14वें संस्करण की पावती बाबत ।
संदर्भ :आपके पत्र सं: डी.जी.सी.ए./प्रशा/का.प./2/373 दिनांक 31.01.2024 ।

महोदय/महोदया,

उपर्युक्त संदर्भित पत्र के साथ आपके कार्यालय द्वारा "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के 14वें संस्करण की ई-प्रति प्राप्त हुई, तदर्थ धन्यवाद । पत्रिका में सभी रचनाएँ प्रशंसनीय है विशेष तौर पर लेखापरीक्षक, स्वास्थ और स्वच्छता, स्वाभुतानंदी हूं, शिक्षा का महत्व, चिरशान्ति, आदि रचनाएँ सारगर्भित एवं सराहनीय हैं।

पत्रिका की साज-सज्जा उत्तम हैं। कार्यालयीन चित्रों ने पत्रिका की सुंदरता को और निखारा है। पत्रिका के कुशल तथा सफल संपादन हेतु संपादक मण्डल को हार्दिक बधाई। पत्रिका के निरंतर उज्ज्वल भविष्य हेतु शुभकामनाएं।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिन्दी कक्ष

E-NO/1611664/Admin
19 FEB 2024

O/o The PAG (A&E)-II
NAGPUR-440001

राजभाषा /अन्य पत्रिका समीक्षा /20 /जा. सं.-135 दिनांक: 15/02/20

सेवा में,
संपादक "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय"
कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यीक लेखापरीक्षा मुंबई
सी 25, 8 वी मंजिल, ऑडिट भवन, बीकेसी, बांद्रा पूर्व,
मुंबई – 400 051

विषय: हिन्दी पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" की प्राप्ति के संबंध में ।

महोदय,

आपके कार्यालय के दिनांक: 31/01/2024 के मेल द्वारा हिन्दी त्रैमासिक ई-पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के चौदहवे संस्करण की प्राप्ति हुई । इसके लिए सहर्ष धन्यवाद । पत्रिका में समाहित सभी रचनाएँ उत्कृष्ट, मनोरंजक, ज्ञानवर्धक और पठनीय हैं। जिनमें श्रीमती सुवर्णा विचारे द्वारा लिखित "पर्वतारोहण", श्री संजय कोटलगी द्वारा लिखित "स्वास्थ और स्वच्छता", सुश्री पूजा साव द्वारा लिखित "जलवायु परिवर्तन", और अरुण कुमार साव द्वारा लिखित "शिक्षा का महत्व" विशेष रूप से सराहनीय हैं । "स्वास्थ और स्वच्छता", "जलवायु परिवर्तन", और "शिक्षा का महत्व" समसामयिक मुद्दों पर आधारित अत्यंत ज्ञानवर्धक रचनाएँ हैं।

हमारे कार्यालय की तरफ से सभी रचनाकारों, संपादक मण्डल के सभी सदस्यों तथा पत्रिका के सम्पादन में सहायक सभी अधिकारियों व सहकर्मियों का अभिनंदन हैं। पत्रिका की प्रगति हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीया

वरिष्ठ लेखा अधिकारी/ राजभाषा

E-NO/1621935/Admin
21 FEB 2024

दूरभाष/Telephone- 2223251

फैक्स/Fax- 0612-2225977

प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) का कार्यालय, बिहार, पटना

OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (A & E), BIHAR, PATNA

पत्रांक-हिं.अ./ले. व हक./s/पत्रिका प्रतिभाव/23-24/ 174

दिनांक-22.02.2024

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन),
कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा,
मुंबई-400051

विषय: कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी गृह पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के 14वें अंक की अभिस्वीकृति एवं प्रतिक्रिया।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय की राजभाषा पत्रिका **"लेखापरीक्षा ज्ञानोदय"** के 14वें अंक की सॉफ्ट कॉपी हमें प्राप्त हुई। पत्रिका का आवरण पृष्ठ अत्यंत ही मनमोहक है। पत्रिका विभिन्न विधाओं में लिखी गई स्वरचित रचनाओं का सुंदर संग्रह है, जिसमें संस्मरण, लेख, कविताएँ आदि शामिल हैं। सभी रचनाकार बधाई के पात्र हैं। आशा है कि यह पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों की हिंदी की मौलिक लेखन प्रतिभा को बढ़ावा देने में प्रेरक की भूमिका निभाएगी।

पत्रिका के उत्तम संपादन हेतु पत्रिका परिवार बधाई के पात्र हैं। पत्रिका के सतत प्रकाशन एवं उज्जवल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाओं सहित।

भवदीय,

सुनील कुमार
22.02.2024

हिंदी अधिकारी (हिंदी अनुभाग)

वीरचंद पटेल पथ, पटना-800001 Beerchand Patel Path, Patna-800001

E-NO/1630303/Admin
23 FEB 2024

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) राजस्थान, जयपुर

क्रमांकः रा .आ.अ./फाइल सं.-एच-11005-02/2023-24/ 184 दिनांक: 07.02.2024

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन),
कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा,
मुंबई-400051.

विषय: तिमाही हिंदी ई-पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के 14वें अंक की प्रतिक्रिया के संबंध में ।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित **तिमाही हिंदी ई-पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के 14वें अंक** की प्रति की प्राप्ति हुई है। **आपकी** पत्रिका के आकर्षक आवरण पृष्ठ के साथ-साथ इसकी साज-सज्जा एवं विषयवस्तु का सुन्दर प्रस्तुतिकरण है और पत्रिका में रचनाओं की विषयवस्तु प्रशंसनीय है।

"लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के संपादक मंडल एवं सभी रचनाकारों को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई तथा पत्रिका की प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

हिंदी अधिकारी
(ई-मेल-rajbhasha.raj2.au@cag.gov.in)

E-NO/1635078/Admin
26 FEB 2024